राहुल द्विवेदी स्मित

उत्तर प्रदेश

एक युधिष्ठिर छला गया है

पुनः शकुनि की कपट-चाल से, एक युधिष्ठिर छला गया है ।।

द्वापर जैसी लाख बिसातें, गली-गली में बिछी हुई हैं ।
छल-छद्मों से ग्रसित गोटियाँ हर चौसर में पड़ी हुई हैं ।
दरवारी हैं विवश सभा में, कौन धर्म का पाँसा फेंके..
कौन न्याय अन्याय बताये, सबकी आंखें ठगी हुई हैं ।
मौन खड़े हैं भीष्म द्रोण सब, दाँव अनूठा चला गया है...
पुनः......।।

जो रहस्य द्वापर में थे वे कलयुग में अति गूढ़ हुए हैं ।
जाने क्या है पाण्डु पुत्र सब, यों कर्तव्यविमूढ़ हुए हैं ।
समझ रहा है कर्ण निरन्तर, धूर्त कौरवों की सब चालें..
किन्तु पाण्डव नियति चक्र पर आँख मूँद आरूढ़ हुए हैं ।
गँवा रहे हैं अपना सबकुछ, कैसा जादू मला गया है...
पुनः शकुनि की.......।।

दुष्ट दुशासन इसी ताक में, कैसे अपना रूप दिखाये ।
नारी को अपमानित कर वह, पौरुष का अधिपत्य जताये ।
यों तो करुण पुकार सुनी जब, कृष्ण दौड़ते आये भी थे..
किन्तु आज इस विकट समय में,कौन भला फिर लाज बचाये ।
विवश द्रौपदी का हर आँसू व्यास-हृदय को गला गया है...

पुनः शकुनि की.......।।

जो कभी सौंपे थे तुमने

जो कभी सौंपे थे तुमने,   क्षण मुझे अनुराग के,
मैं उन्हीं सुधियों के' कोमल,गीत गाता चल रहा हूँ ।
जब कभी विश्वास डोले,   मीत मुड़कर देख लेना ।

कब भला आसान होता,आग सांसों की बुझाना ।
सागरों का नीर खारा,   नित्य पीना, मुस्कुराना ।
किन्तु तुम लेकर गए थे,जो वचन उसके लिए ही,
ओट में आँसू ठहाकों,   के छिपाता चल रहा हूँ।
जब कभी विश्वास डोले,मीत मुड़कर देख लेना ।

आँच पाकर कौन होगा वृक्ष जो मुरझा न जाए ।
यदि झुलस जाए कहीं तो कोपलें कैसे बचाये ।
और अन्दर आग लेकर, मैं झुलसता हूँ निरन्तर
किन्तु जीवन की दिशा में लहलहाता चल रहा हूँ ।
जब कभी........।।

प्रेरणा हो या निराशा, जो मिला तुमसे मिला है ।
तुम कहो क्या पूर्व तुमसे, या तुम्हारे बाद क्या है ।
नित्य समिधा सा जला हूँ, प्रेम के इस यज्ञ में मैं
बस उसी की राख ओढ़े, लौ जलाता चल रहा हूँ.... ।
जब कभी........।।